प्रारंभिक परीक्षा

भारत में रबर बागान

संदर्भ

त्रिपुरा ने 30,000 हेक्टेयर रबर वृक्षारोपण के अपने लक्ष्य को पार कर लिया है, अब इसका लक्ष्य वृक्षारोपण को 69,000 हेक्टेयर तक बढ़ाने का है।

रबर के बारे में -

- **रबर आइसोप्रीन और इलास्टोमर (एक लचीला बहुलक) का एक प्राकृतिक बहुलक है।**
- यह अमेज़न बेसिन की मूल पादप प्रजाति है और इसे 19वीं शताब्दी के अंत में एशिया और अफ्रीका के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के देशों में लाया गया था।
- **रबर उगाने की स्थितियाँ:**
    - **जलवायु:** इसके लिए **25°-35°C तापमान तथा 200 सेमी से अधिक वार्षिक वर्षा** वाली **गर्म एवं आर्द्र जलवायु** की आवश्यकता होती है।
    - **मिट्टी का प्रकार:** अच्छी जल निकासी वाली, छिद्रयुक्त और मध्यम अम्लीय मिट्टी जिसमें कार्बनिक पदार्थ प्रचुर मात्रा में हो। **लैटेराइट मिट्टी को रबर की खेती के लिए सबसे अच्छी मिट्टी माना जाता है।**
- **रबर के प्रकार:**
    - **प्राकृतिक रबर:** प्राकृतिक रबर कुछ पेड़ों के लेटेक्स रस से निकाला जाता है, जैसे कि **हेविया ब्रासिलिएन्सिस पेड़।**
    - **सिंथेटिक रबर: सिंथेटिक रबर पेट्रोलियम उत्पादों से बनाया जाता है।** यह कम खर्चीला और बनाने में आसान है, लेकिन यह प्राकृतिक रबर जितना टिकाऊ नहीं होता।

भारत में रबर उत्पादन

- **अंग्रेजों ने भारत में पहला रबर बागान 1902 में केरल में पेरियार नदी के तट पर स्थापित किया था।**
- **भारत विश्व में रबर का 5वां सबसे बड़ा उत्पादक है।**
    - **शीर्ष 4 उत्पादक: (** 1) थाईलैंड (2) इंडोनेशिया (3) आइवरी कोस्ट (4) वियतनाम
- **भारत वैश्विक स्तर पर रबर का दूसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता (पहला-चीन) है** । भारत की कुल प्राकृतिक रबर खपत का लगभग 40% वर्तमान में आयात के माध्यम से पूरा किया जाता है।
- **शीर्ष रबर उत्पादक राज्य:** केरल > तमिलनाडु > कर्नाटक।

रबर बोर्ड

- **यह रबर अधिनियम, 1947 की धारा (4) के तहत गठित एक वैधानिक संगठन है।**
- **नोडल मंत्रालय:** वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय।
- **मुख्यालय:** कोट्टायम, केरल।
- **संरचना:** बोर्ड का नेतृत्व **केन्द्र सरकार द्वारा नियुक्त अध्यक्ष करते हैं** तथा इसमें 28 सदस्य होते हैं जो प्राकृतिक रबर उद्योग के विभिन्न हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- बोर्ड भारत में रबर उद्योग के विकास के लिए जिम्मेदार है।

स्रोत: [The Hindu - Rubber plantation]

जल्लीकट्टू

संदर्भ

तमिलनाडु के मुक्कनिपट्टी और पल्लापट्टी गांव में आयोजित जल्लीकट्टू में कुल 83 लोग घायल हो गए.

जल्लीकट्टू के बारे में -

- **यह एक पारंपरिक बैल-वशीकरण खेल है।**
- इस खेल में एक बैल को मैदान में छोड़ा जाता है और प्रतिभागी एक निश्चित समय या दूरी तक बैल के कूबड़ को पकड़कर रखने का प्रयास करते हैं। इसे प्रतिभागियों के लिए शक्ति और कौशल का परीक्षण माना जाता है।
- **यह 2000 साल पुरानी परंपरा है जो तमिलनाडु के मदुरै, तिरुचिरापल्ली, थेनी, पुदुक्कोट्टई और डिंडीगुल जिलों में लोकप्रिय है, जिन्हें जल्लीकट्टू बेल्ट के रूप में जाना जाता है।**
- यह **जनवरी के दूसरे सप्ताह** में **तमिल फसल उत्सव पोंगल के दौरान** मनाया जाता है।
- जल्लीकट्टू को किसान समुदाय के लिए अपने शुद्ध नस्ल के देशी बैलों को संरक्षित करने का एक पारंपरिक तरीका माना जाता है।
- **कंगायम, पुलिकुलम, उम्बालाचेरी, बरगुर और मलाई माडू जल्लीकट्टू के लिए उपयोग की जाने वाली लोकप्रिय देशी मवेशियों की नस्लों में से हैं।**

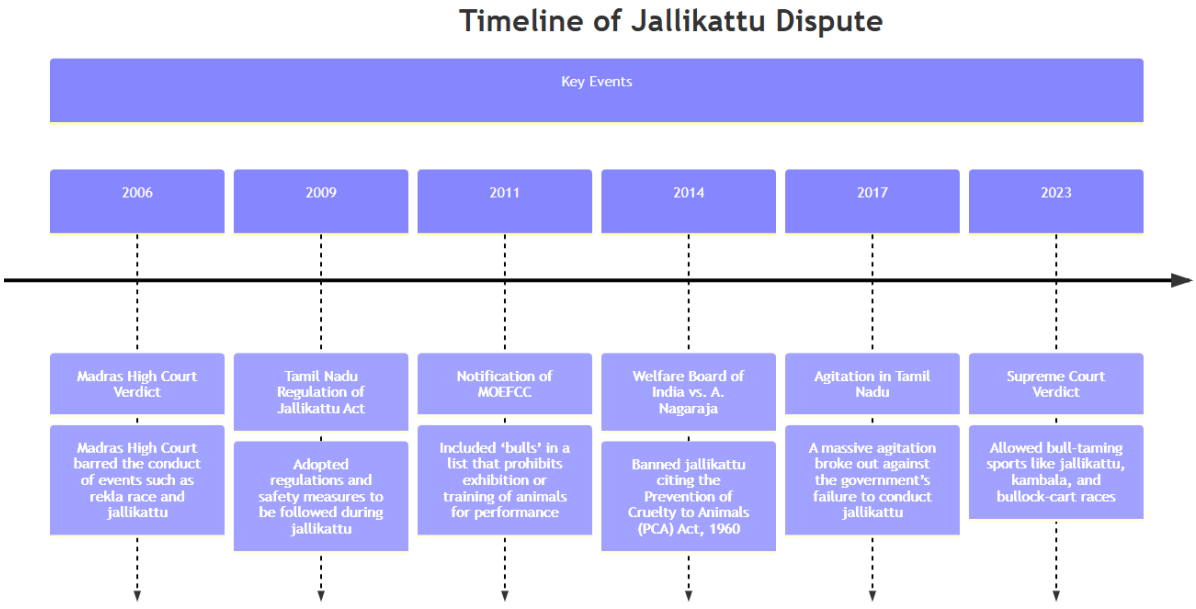

स्रोत: [The Hindu - 83 injured in jallikattu]

नैवाशा झील में जलकुंभी का संकट

संदर्भ

केन्या की लोकप्रिय नैवाशा झील जलकुंभी से प्रभावित हो रही है, जिसने इसके बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया है।

नैवाशा झील

- **यह एक मीठे पानी की झील है जो नैरोबी के उत्तर-पश्चिम में केन्याई रिफ्ट घाटी में स्थित है।**
- यह एक रामसर साइट है।
- इसे हालिया भूवैज्ञानिक उत्पत्ति का माना जाता है और यह विलुप्त या सुप्त ज्वालामुखियों से घिरी हुई है।
- **इसे मालेवा और गिलगिल नदियों द्वारा पोषण मिलता है।**

जलकुंभी के बारे में -

- **यह एक तैरता हुआ जलीय पौधा है जो अमेज़न बेसिन (दक्षिण अमेरिका) की मूल प्रजाति है।**
- यह अपने सुंदर बैंगनी फूलों और चौड़ी, चमकदार पत्तियों के लिए जाना जाता है।
- **निवास स्थान:** झीलों, नदियों और तालाबों जैसे मीठे पानी के निकायों को पसंद करता है, लेकिन खारे पानी में भी पनप सकता है।
- **नकारात्मक प्रभाव**
    - ऑक्सीजन का स्तर कम हो जाता है, जलीय जीवन को नुकसान पहुंचता है।
    - अतिवृद्धि, देशी पौधों का दम घोंटना और जैव विविधता को कम करना।
- **उपयोग**
    - शिल्प और फर्नीचर जैसे टिकाऊ उत्पादों के लिए इसका उपयोग किया जा सकता है।
    - भारी धातुओं और विषाक्त पदार्थों को अवशोषित करता है, जिससे जल प्रदूषण कम होता है।
    - पशु आहार, खाद और जैव ऊर्जा उत्पादन के लिए उपयोगी।

आक्रामक विदेशी प्रजातियाँ

- पौधे, पशु या अन्य जीव जो किसी ऐसे वातावरण में लाए जाते हैं जहां वे मूल रूप से नहीं हैं और जो पर्यावरण, अर्थव्यवस्था या मानव स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकते हैं।
- **जैसे** जलकुंभी, लैंटाना कैमरा, कांग्रेस घास, अफ्रीकी कैटफ़िश आदि।

स्रोत: **The Hindu - Water hyacinth threatens the livelihoods of fishers**

अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी श्रमिकों पर ILO की रिपोर्ट

संदर्भ

अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी (IM) 2022 में वैश्विक श्रम बल का 4.7% थे, जिनकी कुल संख्या 167.7 मिलियन थी, जो 2013 की तुलना में 30 मिलियन अधिक है।

अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों (IM) का प्रमुख योगदान

- **वैश्विक श्रम बल डेटा:**
  - **नियोजित और बेरोजगार**: 155.6 मिलियन आईएम कार्यरत थे और 12.1 मिलियन आईएम बेरोजगार थे।
  - **लिंग-वार प्रतिनिधित्व:** आईएम पुरुष वैश्विक पुरुष श्रम बल का 4.7% हैं**,** जबकि आईएम महिलाएं वैश्विक महिला श्रम बल का 4.4% हैं।
- **आयु संरचना**:
  - प्राइम-एज श्रमिकों (25-54 वर्ष) का योगदान आईएम (125.6 मिलियन) का 74.9% था।
  - युवा श्रमिकों (15-24 वर्ष) की संख्या 9.3% (15.5 मिलियन) थी।
- **अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों को रोजगार देने वाले आर्थिक क्षेत्र:**
  - **सेवा क्षेत्र**: कार्यबल का **68.4% आईएम।**
    - महिला आईएम विशेष रूप से 80.7% पर प्रमुख थे, जबकि पुरुष आईएम 60.8% थे।
- **सर्वाधिक अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी श्रमिकों को समायोजित करने वाले मेजबान देश:**
  - **उच्च आय वाले देश**: 68.4% आईएम (114 मिलियन) की मेजबानी की, विशेष रूप से देखभाल प्रावधान जैसे सेवा क्षेत्रों में।
  - **उच्च-मध्यम आय वाले देश**: 17.4% आईएम (29.2 मिलियन) को समायोजित किया।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO)

- **स्थापना**: 11 अप्रैल**,** 1919 को वर्साय की संधि द्वारा। (मुख्यालय: जिनेवा**,** स्विट्जरलैंड)
- **सदस्य**: 187 सदस्य देश (186 संयुक्त राष्ट्र सदस्य देश + कुक द्वीप समूह)।
  - **भारत अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन का संस्थापक सदस्य है।**
- यह संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की एक विशेष एजेंसी है।
- **यह एकमात्र त्रिपक्षीय संयुक्त राष्ट्र एजेंसी है। यह 187 सदस्य देशों की सरकारों, नियोक्ताओं और श्रमिकों को एक साथ लाती है।**
- **रिपोर्ट:**
  - विश्व रोजगार और सामाजिक परिदृश्य (WESO)
  - वैश्विक वेतन रिपोर्ट
  - विश्व सामाजिक संरक्षण रिपोर्ट

स्रोत: **The Hindu - ILO report**

तमिलनाडु के समुद्र तटों पर मृत ओलिव रिडले कछुए

संदर्भ

हाल के दिनों में तमिलनाडु तट, विशेषकर चेन्नई के आसपास बड़ी संख्या में ओलिव रिडले कछुए मृत पाए गए हैं।

मृत्यु के संभावित कारण

- **मछली पकड़ने के जाल से बायकैच:**
  - ओलिव रिडले कछुए संभोग के दौरान वाणिज्यिक ट्रॉलरों के मछली पकड़ने वाले जाल में फंस जाते हैं, जिससे हवा के लिए सतह तक पहुंचने में कठिनाई के कारण दम घुटने लगता है।
- **घुटन के लक्षण**:
  - पोस्टमार्टम रिपोर्ट में फेफड़ों में घाव और गर्दन में सूजन पाई गई है, जो डूबने और दम घुटने का संकेत है।
- **सुरक्षात्मक उपायों का अभाव**:
  - मछली पकड़ने के जालों में कछुआ-निरोधक उपकरणों (TEDs) का अभाव कछुओं की मृत्यु दर को बढ़ाने में योगदान देता है।

ओलिव रिडले समुद्री कछुओं के बारे में -

- **वे विश्व में पाए जाने वाले सभी समुद्री कछुओं में दूसरे सबसे छोटे और सबसे अधिक संख्या वाले हैं।**
  - **विश्व का सबसे छोटा समुद्री कछुआ:** केम्प्स रिडले समुद्री कछुआ।
  - **सबसे बड़ा समुद्री कछुआ:** लेदरबैक कछुआ
- **विशेषताएँ:**
  - वे अद्वितीय **अरिबाडा (सिंक्रनाइज़्ड सामूहिक घोंसले)** के लिए जाने जाते हैं, **जहां हजारों मादाएं अंडे देने के लिए एक ही समुद्र तट पर एक साथ आती हैं।**
  - मादाएं हर साल घोंसला बनाती हैं और 100 अंडे तक पैदा करती हैं।
  - नर और मादा एक ही आकार के होते हैं, लेकिन **मादाओं का आवरण थोड़ा अधिक गोल होता है।**
  - **वे सर्वाहारी होते हैं, अर्थात वे पौधों और जानवरों दोनों का भोजन करते हैं।**
- **वितरण:** मुख्यतः प्रशांत, अटलांटिक और हिंद महासागर के गर्म जल में पाए जातें है।
- **भारत में प्रमुख स्थल:**
  - **गहिरमाथा समुद्री अभयारण्य:** ओडिशा के केन्द्रपाड़ा जिले में स्थित यह ओलिव रिडले कछुओं का विश्व का सबसे बड़ा प्रजनन स्थल है।
  - **रुशिकुल्या बीच:** ओडिशा के गंजम जिले में स्थित रुशिकुल्या नदी का मुहाना भारत में ऑलिव रिडले कछुओं के लिए दूसरा सबसे बड़ा घोंसला बनाने का स्थान है।
  - वेलास बीच, वर्सोवा बीच और तारकली बीच (महाराष्ट्र)
- **संरक्षण की स्थिति:**
  - **आईयूसीएन रेड लिस्ट:** असुरक्षित
  - **वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972:** अनुसूची 1
  - **CITES:** परिशिष्ट I।

स्रोत: [Indian Express - dead olive ridley turtles]

स्वामित्व योजना और इसके लाभ

संदर्भ

हाल ही में प्रधानमंत्री ने स्वामित्व योजना के तहत वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 50,000 से अधिक गांवों में संपत्ति मालिकों को 65 लाख से अधिक संपत्ति कार्ड वितरित किए।

स्वामित्व योजना(SVAMITVA Scheme) के बारे में -

- **स्वामित्व या SVAMITVA का अर्थ है गांवों का सर्वेक्षण और ग्रामीण क्षेत्रों में उन्नत प्रौद्योगिकी के साथ मानचित्रण।**
- **यह 2021 में राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस (24 अप्रैल) पर शुरू की गई एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है।**
- **नोडल मंत्रालय:** पंचायती राज मंत्रालय
- **शामिल हितधारक:** पंचायती राज मंत्रालय, राज्य राजस्व विभाग, राज्य पंचायती राज विभाग और भारतीय सर्वेक्षण विभाग।
- **महत्वपूर्ण विशेषताएं:**
    - इमेज को कैप्चर करने के लिए नवीनतम ड्रोन प्रौद्योगिकी और सतत संचालन संदर्भ स्टेशन (**CORS**) तकनीक का उपयोग करके ग्रामीण परिवारों को "अधिकारों का रिकॉर्ड" प्रदान किया जाता है।
    - ऐसे सटीक मानचित्र जमीनी भौतिक माप की तुलना में बहुत कम समय में भूमि जोत का स्पष्ट सीमांकन प्रदान करते हैं।
- **वर्तमान उपलब्धि:**
    - अब तक 2 करोड़ संपत्ति कार्ड जारी किये जा चुके हैं।
    - हरियाणा और उत्तराखंड जैसे राज्यों ने पूर्ण कवरेज हासिल कर लिया है।
    - **भावी लक्ष्य:** वित्त वर्ष 2025-26 तक पूरे देश को कवर करने का लक्ष्य।

स्वामित्व योजना के लाभ

- **आर्थिक सशक्तिकरण**:
    - ग्रामीण निवासी ऋण प्राप्त करने के लिए संपत्ति को वित्तीय परिसंपत्ति के रूप में उपयोग कर सकते हैं।
    - किसानों सहित अन्य परिवारों के बीच छोटे व्यवसायों को बढ़ावा देना।
- **बढ़ी हुई तरलता**:
    - भूमि के बाजार मूल्य और ऋण उपलब्धता को बढ़ाता है।
- **बेहतर कराधान और प्रशासन**:
    - संपत्ति कार्ड ग्राम पंचायतों को लाभान्वित करते हुए सटीक संपत्ति कर निर्धारण की सुविधा प्रदान करते हैं।
    - अतिक्रमण को खत्म करने में मदद करता है और ग्रामीण योजना (जैसे, निर्माण परमिट) में सहायता करता है।
- **उन्नत भूमि अभिलेख**:
    - ग्राम पंचायत स्तर पर सटीक एवं अद्यतन GIS-आधारित संपत्ति मानचित्र उपलब्ध होंगे।

स्रोत: **Indian Express - What is SVAMITVA Scheme**

आत्महत्या के लिए उकसाना - क्यों सर्वोच्च न्यायालय ने प्रावधान के इस्तेमाल में सावधानी बरतने की सलाह दी?

संदर्भ

सर्वोच्च न्यायालय ने कानूनी प्रावधान के दुरुपयोग को रोकने के लिए भारतीय दंड संहिता की धारा 306 के तहत आत्महत्या के लिए उकसाने के मामलों के संबंध में जांच एजेंसियों और अदालतों को संवेदनशील बनाने की आवश्यकता पर बल दिया है।

इसके बारे में -

- **उकसावे की परिभाषा**: आईपीसी की धारा 107 (भारतीय न्याय संहिता, 2023 की धारा 45 के समान) उकसावे को इस प्रकार परिभाषित करती है:
    - किसी को कोई काम करने के लिए उकसाना।
    - किसी कार्य को करने के लिए षडयंत्र में शामिल होना।
    - जानबूझकर किसी कार्य या अवैध चूक में सहायता करना।
- **आईपीसी की धारा 306**: आत्महत्या के लिए उकसाने पर 10 वर्ष तक कारावास और जुर्माने का प्रावधान है।
- **उकसावे को साबित करना**: इस बात का सबूत होना आवश्यक है कि अभियुक्त ने मृतक को आत्महत्या के लिए सीधे तौर पर उकसाया या सहायता की।

सर्वोच्च न्यायालय का हालिया फैसला (अक्टूबर, 2024)

सर्वोच्च न्यायालय ने आत्महत्या के लिए उकसाने के मामलों का आकलन करने के लिए उदाहरणात्मक (संपूर्ण नहीं) मानदंड स्थापित किए हैं:

- **असहनीय उत्पीड़न:** क्या अभियुक्त ने "असहनीय उत्पीड़न या यातना" की ऐसी स्थिति पैदा की, जिससे मृतक के लिए आत्महत्या ही एकमात्र विकल्प प्रतीत हुआ।
- **कमजोरियों का शोषण:** क्या अभियुक्त ने मृतक की भावनात्मक कमजोरियों का शोषण किया, जिससे उन्हें "जीवन के लिए बेकार या अयोग्य" महसूस हुआ।
- **धमकी और भय:** यदि अभियुक्त ने मृतक या उसके परिवार को नुकसान पहुंचाने की धमकी दी हो, या वित्तीय बर्बादी की धमकी दी हो।
- **झूठे आरोप:** यदि मृतक के विरुद्ध झूठे आरोप लगाए गए हों, तो इससे उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंच सकता है तथा सार्वजनिक रूप से उनका अपमान हो सकता है तथा उनकी गरिमा को ठेस पहुंच सकती है।

आत्महत्या के लिए उकसाने पर सर्वोच्च न्यायालय के उदाहरण

- **एम मोहन बनाम राज्य (2011):**
    - सबूत के लिए सक्रिय या प्रत्यक्ष उकसावे की आवश्यकता होती है, जिससे आत्महत्या के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं बचता।
- **उदे सिंह बनाम हरियाणा राज्य (2019)**:
    - मृतक द्वारा अपरिहार्य समझी जाने वाली स्थिति उत्पन्न करने वाले कृत्यों के साक्ष्य की आवश्यकता होती है।

स्रोत: [Indian Express - Abetement to suicide]

समाचार संक्षेप में

प्रतिभूति लेनदेन कर (STT) संग्रह में वृद्धि

- जनवरी, 2025 तक STT संग्रह 75% से अधिक बढ़कर ₹44,538 करोड़ तक पहुंच गया, जबकि 2024 में इसी अवधि में ₹25,415 करोड़ था। यह संग्रह वित्त वर्ष 2024-25 के लिए ₹37,000 करोड़ के बजट अनुमान से अधिक हो गया।
- **STT भारत में मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंजों पर सूचीबद्ध प्रतिभूतियों की खरीद और बिक्री पर लगाया जाने वाला प्रत्यक्ष कर है।**
- **यह केंद्र सरकार द्वारा लगाया और वसूला जाता है।**
- STT ऑफ-मार्केट लेनदेन या कमोडिटी या मुद्रा लेनदेन पर लागू नहीं है।

स्रोत: Indian Express - Securities transaction tax

ला पारौस अभ्यास

- **यह एक बहुपक्षीय नौसैनिक अभ्यास है जो समुद्री सुरक्षा को मजबूत करने और भाग लेने वाली नौसेनाओं के बीच अंतर-संचालनशीलता बढ़ाने के लिए आयोजित किया जाता है।**
- **सदस्य:** भारत, फ्रांस (मेजबान राष्ट्र), संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर और यूके।
- **स्थान: मलक्का, सुंडा और लोम्बोक जलडमरूमध्य** में आयोजित किया गया, जो हिंद महासागर और प्रशांत महासागर के बीच प्रमुख अवरोध बिंदु हैं।
- यह अभ्यास का चौथा संस्करण है।

स्रोत: The Hindu - Nine Navies hold joint drills

रानी सेम्बियन महादेवी

- **सेम्बियान महादेवी गंडारादित्य चोल की पत्नी के रूप में 949 ई. - 957 ई. तक चोल साम्राज्य की रानी और साम्राज्ञी थीं।**
- वह चोल साम्राज्य की सबसे शक्तिशाली साम्राज्ञियों में से एक थी।
- **उन्होंने साठ वर्षों की अवधि में दक्षिण भारत में कई मंदिरों का निर्माण कराया और कई मंदिरों को उदार उपहार दिये।**
- **वह उत्तम चोल की माता थी।**

स्रोत: The Hindu - Queen Sembiyan was the real founder of the Chola Empire

संपादकीय सारांश

हमास और इजरायल युद्ध विराम पर सहमत हुए

संदर्भ

15 महीने के युद्ध के बाद, इजराइल और हमास गाजा पट्टी में चरणबद्ध युद्धविराम समझौते पर सहमति बन गई है।

गाजा में युद्धविराम समझौते के 3 चरण

चरण-1:

- हमास 33 बंधकों को रिहा करेगा।
- इजराइल 900 से 1,650 फिलिस्तीनी बंदियों को रिहा करेगा, जिनमें 7 अक्टूबर 2023 से हिरासत में लिए गए लोग भी शामिल हैं।
- इज़रायली रक्षा बल (आईडीएफ) मध्य गाजा और नेत्ज़ारिम कॉरिडोर (गाजा को विभाजित करने वाला 2-4 किमी चौड़ा सुरक्षा क्षेत्र) से हट जाएगा। आईडीएफ फिलाडेल्फिया कॉरिडोर से भी हट जाएगा, जो गाजा-मिस्र सीमा पर बफर जोन है।

चरण-2:

- आगे भी बंधकों और कैदियों का आदान-प्रदान होगा।
- उम्मीद है कि दोनों पक्ष शत्रुता की स्थायी समाप्ति की घोषणा करेंगे।

चरण-3:

- फ़िलिस्तीनी प्राधिकरण के तहत एक संयुक्त प्रशासन बनाने पर ध्यान केंद्रित करते हुए गाजा के शासन पर चर्चा शुरू होगी।
- गाजा का पुनर्निर्माण शुरू हो जाएगा, और उम्मीद है कि इज़राइल अपने सभी सैनिकों को वापस ले लेगा।

गाजा में मानवीय संकट

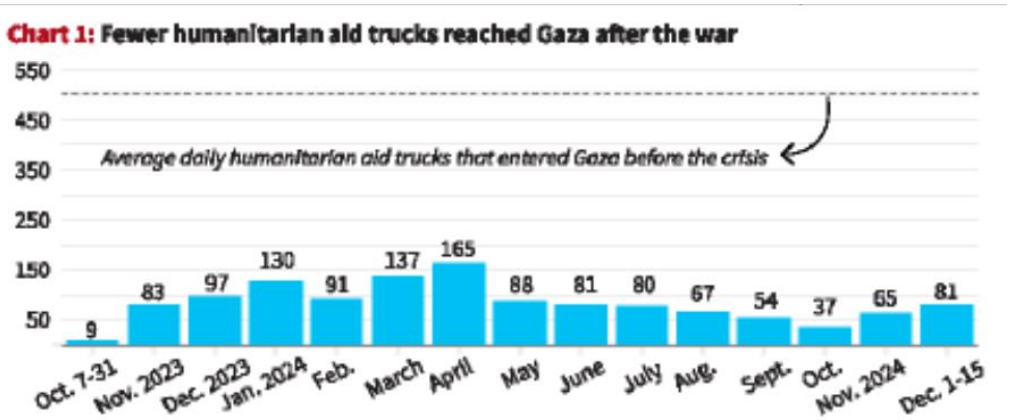

- **सहायता आपूर्ति में गिरावट**: 7 अक्टूबर, 2023 के बाद गाजा में प्रवेश करने वाले मानवीय सहायता ट्रकों की दैनिक संख्या 500-600 से घटकर केवल एक अंश रह गई।

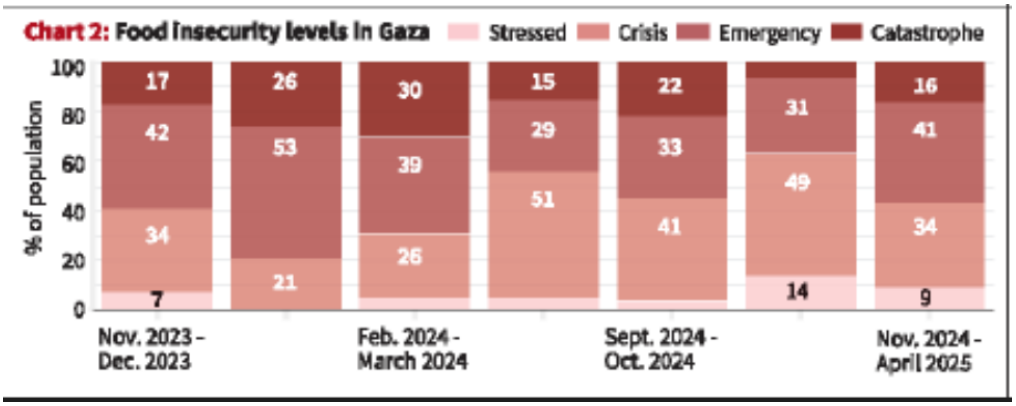

- **गंभीर खाद्य असुरक्षा**: एकीकृत खाद्य सुरक्षा चरण वर्गीकरण के अनुसार, दिसंबर 2023 तक गाजा की 85% आबादी 'संकट', 'आपातकालीन', या 'विनाशकारी' स्तर की खाद्य असुरक्षा का सामना कर रही थी।

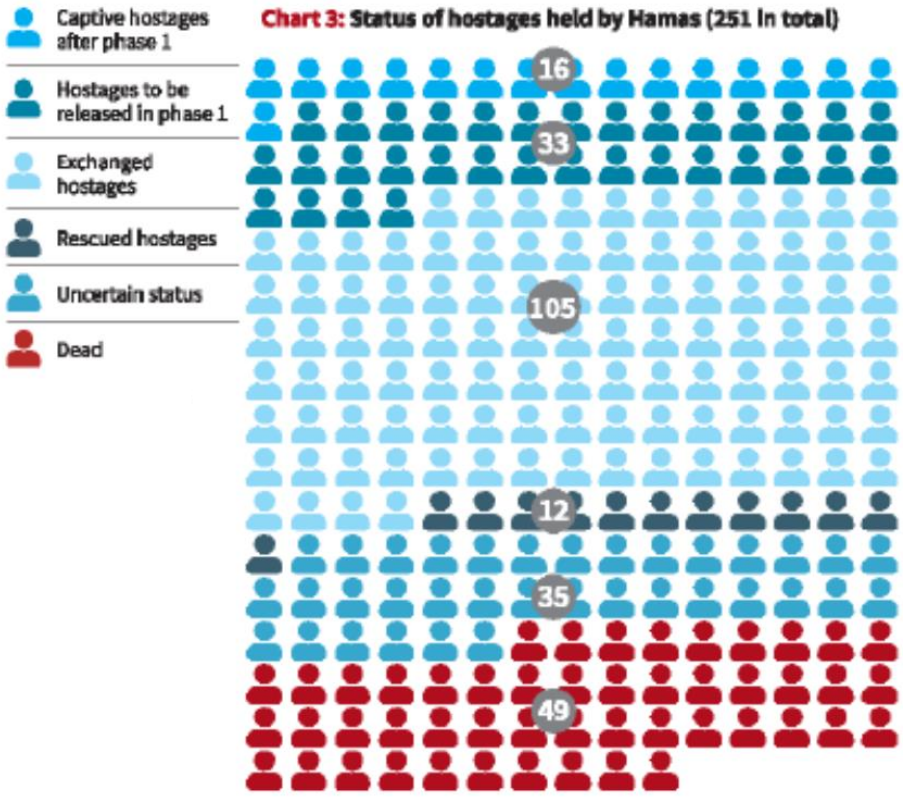

- **बंधक संकट:** 15 जनवरी 2025 तक, 7 अक्टूबर 2023 को हमास द्वारा मूल रूप से लिए गए 251 बंधकों में से 98 बंधक बचे हैं, जिनमें से कुछ के जीवित होने की पुष्टि हुई है।

- **व्यापक संरचनात्मक क्षति**: 1 दिसंबर, 2024 तक, गाजा में 69% संरचनाएं क्षतिग्रस्त हो गईं:
    - 60,368 संरचनाएँ नष्ट हो गईं।
    - 20,050 गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त और 90,000 से अधिक या तो मामूली या संभवतः क्षतिग्रस्त।
    - उत्तरी गाजा और राफा में क्षति में सबसे अधिक वृद्धि देखी गई, जबल्या नगर पालिका ने 1,339 नई क्षतिग्रस्त संरचनाओं की सूचना दी।

हमास के लिए समझौते का क्या मतलब है?

- **संभलने का समय:** युद्ध विराम से हमास को इजरायली हमलों से भारी नुकसान के बाद अपने संगठन और नेतृत्व को फिर से खड़ा करने का मौका मिला है।
- **नये लड़ाकों की भर्ती:** हमास ने युद्ध के दौरान खोए अपने लड़ाकों की जगह नये लड़ाकों की भर्ती कर ली है।
- **राजनीतिक लक्ष्य:** हमास का लक्ष्य गाजा की भावी सरकार में अपनी भूमिका सुनिश्चित करना है, जो 1989 के ताइफ समझौते के बाद लेबनान में हिजबुल्लाह की स्थिति के समान है।
- **फिलीस्तीनी प्राधिकरण की कोई भूमिका नहीं:** इस समझौते में फिलीस्तीनी प्राधिकरण के गाजा लौटने का उल्लेख नहीं है, जिससे क्षेत्र पर हमास की पकड़ मजबूत होगी।

इस समझौते का इसराइल के लिए क्या मतलब है?

- **कुछ सफलताएँ:** इज़राइल ने ईरान के प्रभाव को कमजोर कर दिया है और हमास के महत्वपूर्ण नेताओं को मार डाला है।
- **अधूरे लक्ष्य:** इजरायल ने गाजा से हमास को पूरी तरह से नहीं हटाया है, जो इसका एक मुख्य उद्देश्य था।
- **बंधकों की रिहाई:** सभी बंधकों को वापस पाना एक बड़ी जीत होगी, खासकर तब जब इजरायली परिवार उनकी रिहाई के लिए विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं।
- **राजनीतिक चुनौतियाँ:** यह समझौता नेतन्याहू के दक्षिणपंथी समर्थकों को परेशान कर सकता है, जो कैदियों के आदान-प्रदान को अनुचित मान सकते हैं।
    - विपक्षी नेताओं ने नेतन्याहू पर राजनीतिक कारणों से बंधक सौदे में देरी करने का आरोप लगाया है।
- **अंतर्राष्ट्रीय समर्थन:** डोनाल्ड ट्रम्प जैसे नेताओं से भविष्य में मिलने वाली मदद इस बात को प्रभावित कर सकती है कि नेतन्याहू युद्ध विराम को किस प्रकार संभालेंगे।

स्रोत: [The Hindu: Pyrrhic peace]
[The Hindu: What the ceasefire deal means for Palestine and Israel]
[Indian Express: What are the key takeaways from the Israel-Hamas ceasefire agreement?]

दिवालियापन समाधान का पुनर्गठन

संदर्भ

- दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता (IBC), 2016 को संरचित और समयबद्ध तरीके से दिवाला समाधान को सुव्यवस्थित करने के लिए एक महत्वपूर्ण आर्थिक सुधार के रूप में पेश किया गया था।
- शुरुआत में इसे भारत के कारोबारी माहौल को बेहतर बनाने और डिफॉल्टरों को जवाबदेह बनाने के एक उपकरण के रूप में देखा गया, संस्थागत क्षमता और प्रक्रियात्मक अक्षमता से संबंधित मुद्दे सामने आए हैं।
- जेट एयरवेज मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले ने दिवालिया व्यवस्था में संरचनात्मक कमजोरियों को उजागर किया।

IBC ढांचे में प्रमुख मुद्दे

- **संस्थागत बोझ:**
    - **NCLT और NCLAT की दोहरी भूमिका:** कॉर्पोरेट दिवालियापन (IBC) और कंपनी अधिनियम के तहत मामलों को संभालना, जिससे दोहरा बोझ पैदा होता है।
    - **पुराना ढांचा:** NCLT की परिकल्पना 1999 में की गई थी और इसका संचालन 2016 में हुआ, यह पुराना आर्थिक यथार्थ दर्शाता है।
        - **63 सदस्यों** की स्वीकृत संख्या, जिनमें से कई एक से अधिक बेंचों पर कार्यरत हैं, एक अड़चन पैदा करती है।
    - **परिचालन अक्षमताएं:** कई NCLT बेंच पूरे कार्य दिवस में काम नहीं करती हैं।
        - **समाधानों में देरी**: वित्तीय वर्ष 2023-24 में दिवालिया समाधानों का औसत समय बढ़कर 716 दिन हो गया, जो वित्त वर्ष 2022-23 में 654 दिन था।
- **डोमेन विशेषज्ञता में कमी**: वर्तमान नियुक्तियाँ उच्च जोखिम वाले दिवाला मामलों में विशेष ज्ञान की आवश्यकता को नजरअंदाज करती हैं।
    - जेट एयरवेज मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने इसकी आलोचना करते हुए कहा था कि सदस्यों में जटिल मामलों को संभालने की विशेषज्ञता का अभाव है।
- **प्रक्रियागत अकुशलताएं:** सभी आवेदनों, यहां तक कि प्रगति रिपोर्ट के लिए भी अनिवार्य सुनवाई से अनावश्यक देरी होती है।
    - वैकल्पिक विवाद समाधान विधियों के सीमित उपयोग से प्रणाली पर अधिक भार पड़ता है।
    - नौकरशाही की अकुशलताएँ:
        - रजिस्ट्री के पास मामलों को सूचीबद्ध करने में देरी करने या मना करने के लिए अत्यधिक शक्तियां होती हैं।
        - NCLT /NCLAT के सदस्यों द्वारा सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों की अवहेलना करने के उदाहरण न्यायिक निष्ठा के लिए खतरा हैं।
- **व्यापक विलंब:** सर्वोच्च न्यायालय ने चेतावनी दी कि समयसीमा बढ़ाने में अत्यधिक विवेकाधिकार से IBC के अप्रचलित होने का खतरा है।

प्रस्तावित सुधार और सिफारिशें

- **नियुक्तियों के लिए हाइब्रिड मॉडल:** एक ऐसा मॉडल जो न्यायिक अनुभव और डोमेन विशेषज्ञता दोनों को महत्व देता हो, महत्वपूर्ण है।
- **विशेषीकृत पीठें:** विशेष रूप से विलय और एकीकरण के लिए दक्षता और विशेषज्ञता दोनों में सुधार करने के लिए मामलों को वर्गीकृत करती हैं।
- **बुनियादी ढांचे में सुधार:** संचालन को बनाए रखने के लिए न्यायालय कक्षों, योग्य कर्मचारियों और मजबूत सहायता प्रणालियों को प्राथमिकता दी जाएगी।

- **प्रक्रियागत नवाचार:** दिवालियापन आवेदन प्रस्तुत करने से पहले अनिवार्य मध्यस्थता से भार कम हो सकता है।
    - अनावश्यक सुनवाई को कम करें और वैकल्पिक विवाद समाधान तंत्र को बढ़ावा दें।
- **समयसीमा का पालन:** NCLT /NCLAT को IBC समयसीमा का पालन करने के लिए संवेदनशील बनाएं, जैसा कि जेट एयरवेज मामले में जोर दिया गया था।
- **ऋण समाधान से आगे फोकस:** आर्थिक कायाकल्प को आगे बढ़ाने और विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए IBC का विकास करना।

स्रोत: **The Hindu: Recasting insolvency resolution**

अमेरिका में प्रौद्योगिकी उद्योग पर H-1B वीज़ा का प्रभाव

संदर्भ

हाल ही में घोषित H-1B वीज़ा नए नियम 2025 वीज़ा नवीनीकरण प्रक्रिया में एक अभिनव अद्यतन लाकर एक बड़ा लाभ प्रदान करते हैं।

अमेरिकी प्रौद्योगिकी उद्योग पर H-1B वीज़ा का प्रभाव

- **वेतन वृद्धि और उत्पादकता**
  - **जियोवानी पेरी द्वारा अध्ययन (2013)**: "STEM कर्मचारी, H-1B वीजा और अमेरिकी शहरों में उत्पादकता" शीर्षक वाले इस अध्ययन में पाया गया कि H-1B कर्मचारियों ने 1990 से 2010 तक 219 अमेरिकी शहरों में मूल कॉलेज-शिक्षित श्रमिकों के वेतन और समग्र उत्पादकता को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया।
    - रोजगार में विदेशी STEM हिस्सेदारी में 1% की वृद्धि के परिणामस्वरूप देशी कॉलेज स्नातकों के वेतन में 7-8% की वृद्धि हुई।
    - गैर-कॉलेज-शिक्षित देशी श्रमिकों ने विदेशी STEM रोजगार में प्रत्येक 1% वृद्धि के लिए 3-4% वेतन वृद्धि देखी।
    - इस अवधि के दौरान अमेरिका में कुल उत्पादकता वृद्धि में विदेशी एसटीईएम श्रमिकों की आमद 30% से 50% थी।
- **मूल निवासी कर्मचारियों के साथ पूरकता:**
  - **कैइमी और पेरी द्वारा अनुवर्ती अध्ययन (2022):** इस शोध में इस बात पर प्रकाश डाला गया कि अप्रवासी अक्सर मूल कर्मचारियों की तुलना में विभिन्न व्यवसायों में विशेषज्ञता रखते हैं, जिससे उन्हें श्रम बाजार में एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करने के बजाय पूरक बनने का अवसर मिलता है।
- **नवाचार और उद्यमिता:**
  - **विलियम केर द्वारा शोध:** कुशल आप्रवासी अमेरिकी पेटेंट गतिविधि में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, विशेष रूप से उभरती प्रौद्योगिकियों में।
  - **जेनिफर हंट के निष्कर्ष:** स्थायी निवास के लिए आवेदन करने वाले H-1B कर्मचारी प्रायः नवोन्मेषी और उद्यमशील होते हैं, और प्रायः ऐसी कम्पनियां शुरू करते हैं जो अमेरिकी नागरिकों के लिए रोजगार का सृजन करती हैं।

व्यापक आर्थिक प्रभाव

- अमेरिकी आव्रजन परिषद के अनुसार, आप्रवासी कर्मचारी विभिन्न तरीकों से रोजगार के नए अवसर पैदा करते हैं:
  - वे विभिन्न कौशल अंतरालों को भरते हैं, तथा समग्र श्रम बाजार दक्षता को बढ़ाते हैं।
  - उनके खर्च से उपभोक्ता मांग बढ़ती है, जिससे व्यवसायों को घरेलू स्तर पर परिचालन का विस्तार करने में मदद मिलती है।
  - आप्रवासी अक्सर नए व्यवसाय शुरू करते हैं, जिससे रोजगार सृजन में वृद्धि होती है।
  - आप्रवासियों के नए विचार और नवाचार आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हैं।

स्रोत: **The Hindu: The impact of H-1B visas on the tech industry in U.S.**

भारतीय अर्थव्यवस्था – चक्रीय मंदी या संरचनात्मक चुनौतियाँ?

संदर्भ

भारतीय अर्थव्यवस्था वर्तमान में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना कर रही है, जिससे यह सवाल उठता है कि क्या यह चक्रीय मंदी का सामना कर रही है या यह महामारी-पूर्व विकास पथ पर लौट रही है।

वर्तमान आर्थिक विकास रुझान

जीडीपी वृद्धि अनुमान

- **अनुमानित विकास दर:** वित्तीय वर्ष 2024-25 में भारत की जीडीपी 6.4% बढ़ने की उम्मीद है, जो 2020-21 में 5.8% की महामारी-प्रेरित संकुचन के बाद से सबसे धीमी गति है।
    - यह 2023-24 में 8.2% की वृद्धि से गिरावट का प्रतिनिधित्व करता है और 6.5% के पहले के सरकारी पूर्वानुमानों से कम है।
- **योगदान देने वाले कारक:** मंदी का मुख्य कारण सकल स्थिर पूंजी निर्माण (जीएफसीएफ) में कमजोर वृद्धि है, जिसके 9% से घटकर 6.4% होने की उम्मीद है, और इन्वेंट्री वृद्धि 5.9% से घटकर 4.5% हो गई है।
    - इसके विपरीत, निजी उपभोग व्यय (पीएफसीई) और सरकारी खर्च में वृद्धि का अनुमान है

प्रमुख चुनौतियाँ और संकेतक

- **कमज़ोर उपभोग आधार**
    - सीमित ऊर्ध्वगामी गतिशीलता और स्थिर वास्तविक मजदूरी वृद्धि विवेकाधीन व्यय को प्रतिबंधित करती है।
    - उपभोग आधार का खोखला होना कुछ विशिष्ट बाजारों में स्पष्ट है:
        - छोटी कारों की बिक्री (10 लाख रुपये से कम खंड):
            - हिस्सेदारी 73% से घटकर 2024-25 में 46% हो गई।
            - मारुति सुजुकी: 2024 की पहली छमाही में मिनी और कॉम्पैक्ट कारों की बिक्री 2017-18 के स्तर से कम।
        - कॉर्पोरेट क्षेत्र में प्रीमियमीकरण एक सिकुड़ते बाजार को दर्शाता है, जो शीर्ष उपभोग करने वाले समूह पर केंद्रित है।
- **श्रम बाज़ार के मुद्दे**
    - उत्पादक रोजगार के अवसरों का सीमित सृजन।
    - अनौपचारिक प्रतिष्ठानों में या अवैतनिक पारिवारिक सहायता के रूप में स्व-रोज़गार व्यक्तियों की बढ़ती संख्या।
    - औपचारिक रोजगार बड़े पैमाने पर जनशक्ति आपूर्तिकर्ताओं और कम-कौशल सेवाओं (जैसे, ठेकेदार, सुरक्षा सेवाओं) द्वारा संचालित होता है।
    - वास्तविक वेतन वृद्धि मंद बनी हुई है।
- **बढ़ता घरेलू ऋण**
    - जून 2024 तक घरेलू कर्ज बढ़कर 43% हो गया।
    - व्यक्तिगत ऋण वाले 60% उधारकर्ताओं के पास पहले से ही तीन से अधिक सक्रिय ऋण हैं, जो वित्तीय तनाव को दर्शाता है।
    - बढ़ा हुआ कर्ज उपभोग को उल्लेखनीय रूप से बढ़ावा देने में विफल रहा है।

निवेश और नीतिगत चुनौतियाँ

- **निवेश गतिविधि में कमी**
    - सीएमआईई के आंकड़ों के अनुसार नई परियोजनाओं की घोषणा धीमी हो रही है।

  - एफडीआई का स्तर हाल के उच्चतम स्तर से नीचे बना हुआ है।
  - भारतीय उद्योग जगत ने मध्यम वर्ग की घटती मांग पर चिंता व्यक्त की है तथा विकास के आंकड़ों पर सवाल उठाया है।
- **नीति अनिश्चितता और सरकारी निष्क्रियता**
  - आरबीआई की मौद्रिक नीति अत्यधिक सख्त रही है, जिससे रुपए के समायोजन में देरी के कारण निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता कम हो रही है।
  - ऐसा माना जा रहा है कि सरकार जोखिम से बच रही है और आर्थिक गति की जिम्मेदारी केंद्रीय बैंक पर डाल रही है।
- **औद्योगिक नीति संबंधी चिंताएँ**
  - पीएलआई (उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन) जैसी औद्योगिक नीति पहलों से अभी भी मजबूत परिणाम मिलना बाकी है।
  - प्रमुख व्यापारिक घरानों द्वारा औद्योगिक क्षेत्र से सेवा क्षेत्र की ओर रुख करना विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र में अंतर्निहित समस्याओं का संकेत है।

संरचनात्मक और वितरण संबंधी चुनौतियाँ

- **असमान विकास संरचना:** महामारी के बाद की वृद्धि से मुख्य रूप से श्रम बल के एक छोटे, उच्च कुशल हिस्से को लाभ होगा।
  - ऊर्ध्वगामी गतिशीलता के सीमित मार्ग व्यापक उपभोग और आर्थिक गतिशीलता को बाधित करते हैं।
- **निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता के मुद्दे:** रुपये के विलंबित समायोजन से निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता कमजोर हुई है, जिससे सुधार में और बाधा आई है।
- **क्षेत्रीय कमज़ोरियाँ:** जी.सी.सी. में तेजी का निचले स्तर पर स्थिर होना, गहरी आर्थिक कमज़ोरियों को उजागर करता है।
  - अनौपचारिक रोजगार और कमजोर वास्तविक मजदूरी वृद्धि संरचनात्मक परिवर्तन में बाधा डालती है।

निष्कर्ष

- यद्यपि अर्थव्यवस्था में सुधार के संकेत दिख रहे हैं, लेकिन साक्ष्य विशुद्ध चक्रीय मंदी के बजाय संरचनात्मक चुनौतियों की ओर संकेत करते हैं।
- सीमित रोजगार सृजन, धीमी वेतन वृद्धि, मध्यम वर्ग की घटती मांग और धीमा निवेश महत्वपूर्ण बाधाएं हैं।
- सरकार को उत्पादक रोजगार को बढ़ावा देने , उपभोग क्षमता को बढ़ाने तथा विकास को पुनर्जीवित करने के लिए नीतिगत अनिश्चितता को दूर करने के लिए लक्षित सुधारों को अपनाना चाहिए।

स्रोत: **Indian Express: A restricted upward mobility**